3

कुंदन

हिंदी व्याकरण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

WOODS
BOOK PUBLISHING

कुंदन हिंदी व्याकरण–3

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. मौखिक 2. हिंदी 3. व्याकरण 4. देवनागरी **(ख)** 1. भाषा 2. लिखित 3. लिपि 4. हिंदी **(ग)** 1. 3 2. 7 3. 3 4. 7 (घ) 1. भाषा वह माध्यम है, जिसके द्‌वारा हम अपने मन के भावों एवं विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं और दूसरों के भावों एवं विचारों को ग्रहण करते हैं। 2. भाषा के दो रूप हैं–(1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा। इनमें से मौखिक भाषा मूल रूप है। 3. भाषा को शुद्‌ध रूप में लिखने, पढ़ने, बोलने के लिए व्याकरण की आवश्यकता पड़ती है। 4. देवनागरी और गुरुमुखी 5. टेलीफोन पर बातें करने, शिक्षक के स्कूल में पढ़ान, नेताजी के भाषण देने आदि में। **करने की बारी–**पंजाबी, अंग्रेजी, तेलुगू, बांग्ला, संस्कृत, सिंधी, तमिल, गुजराती।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. वर्णों के समूह को 2. 33 3. अनुस्वार 4. संयुक्त व्यंजन **(ख)** 1. वर्ण 2. स्वरों 3. व्यंजन 4. संयुक्त 5. वर्णमाला **(ग)** 1. 7 2. 3 3. 7 4. 3 5. 7 **(घ)** 1. वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। 2. वर्ण दो प्रकार के होते हैं– स्वर और व्यंजन। 3. व्यंजन के बाद आने वाले स्वर को मात्रा कहते हैं। 4. जो वर्ण दो व्यंजनों के मिलने से बनते हैं, उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं। 5. जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है उन्हें स्वर कहते हैं। जिन वर्णों के उच्चारण में किसी-न-किसी स्वर की सहायता लेनी पड़ती है उन्हें व्यंजन कहते हैं। **करने की बारी–**ब (व्यंजन), ई (स्वर), ऋ (स्वर), क (व्यंजन), ट (व्यंजन)

3. शब्द-विचार

(क) 1. सार्थक 2. उपसर्ग 3. ता 4. शब्द **(ख)** 1. वर्णों 2. अविकारी 3. सार्थक 4. निरर्थक **(ग)** 1. आज्ञा 2. अरुचि 3. कार्यक्रम 4. प्रशंसा 5. अध्यापिका **(घ)** 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। 2. अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं–(1) सार्थक शब्द (2) निरर्थक शब्द 3. उपसर्ग को मूल शब्द से पहले लगाया जाता है। 4. स्वयं करें। 5. वाक्य में प्रयोग करने पर जिन शब्दों का लिंग, वचन, पुरुष, तथा कारक के कारण रूप बदल जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं जैसे– **पुस्तक**-पुस्तकें, पुस्तकों, **लड़का–**लड़के, लड़कों आदि। **उदाहरण–**(क) वह पुस्तक पढ़ रहा है। (ख) वे पुस्तकें पढ़ रहे हैं। वाक्य में प्रयोग करने पर जिन शब्दों का रूप नहीं बदलता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं; जैसे– किंतु, परंतु, प्रतिदिन, ध्यानपूर्वक आदि। **उदाहरण–**(क) मैं प्रतिदिन विद्‌यालय जाता हूँ। (ख) हम प्रतिदिन विद्‌यालय जाते हैं। **करने की बारी–सार्थक शब्द–**बंदर, मटर, कोयला, चाय, महल **निरर्थक शब्द–**वंदर, वोयला, वाय, वटर, वहल

4. संज्ञा

(क) 1. पाँच 2. इन सभी से 3. एक ही जाति के सभी प्राणियों का 4. द्रव्यवाचक संज्ञा 5. भाववाचक संज्ञा **(ख)** 1. संज्ञा 2. जातिवाचक 3. भाववाचक 4. व्यक्तिवाचक 5. समूहवाचक **(ग)** 1. अच्छाई 2. मूर्खता 3. कमजोरी 4. खटास 5. कठोरता 6. वीरता 7. लेख 8. चाल 9. मोटापा 10. गरमी **(घ)** 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान और भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे-शेर, गीदड़, कमला, सुभाष, कलम, पुस्तक, बोतल, पहाड़, नदी, बाज़ार, मंदिर, सुंदरता, ममता, क्रोध, प्यार, बुराई, भलाई आदि। 2. संज्ञा के पाँच भेद हैं–(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा (2) जातिवाचक संज्ञा (3) भाववाचक संज्ञा 4. द्रव्यवाचक संज्ञा 5. समूहवाचक संज्ञा 3. व्यक्तिवाचक संज्ञा–जो शब्द किसी विशेष प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं, वे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे-महात्मा गाँधी, भगवद् गीता, ऐरावत, हिमालय, गंगा, दिल्ली आदि। **जातिवाचक संज्ञा**–जिन शब्दों से एक ही जाति के सभी प्राणियों या वस्तुओं का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे-लड़का, पहाड़, मैदान, पुस्तक आदि। 4. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**-महात्मा गाँधी, भगवद् गीता **जातिवाचक संज्ञा**-लड़का, पहाड़ **भाववाचक संज्ञा**-ममता, प्रेम **द्रव्यवाचक संज्ञा–**सोना, गेहूँ, **समूहवाचक संज्ञा–**कक्षा, सेना। **करने की बारी–**स्वयं करें।

5. लिंग

(क) 1. हाथी 2. मोरनी 3. प्रधानमंत्री **(ख)** 1. छात्र 2. बेटे 3. महिलाएँ 4. दर्जी **(ग)** 1. मुर्गा 2. मालिन 3. गुड्डा 4. गायिका 5. शेर **(घ)** 1. शब्द के जिस रूप में उसके पुरुष जाति या स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। 2. जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं। 3. जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं। **करने की बारी–**स्वयं करें।

6. वचन

(क) 1. बहुवचन 2. खिड़की 3. ये दोनों 4. एकवचन **(ख)** 1. डाकुओं 2. मक्खियाँ 3. दर्शकों 4. नदियाँ **(ग)** 1. घोड़ों 2. नदियों 3. लड़कियाँ 4. ऋतुओं **(घ)** 1. शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक वस्तु या व्यक्ति का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। 2. घोड़ा, झंडा, नदी, ऋतु, देवी 3. घोड़े, झंडे, नदियाँ, ऋतुएँ, देवियाँ **करने की बारी–**बहुवचन, एकवचन, बहुवचन, बहुवचन, एकवचन

7. कारक

(क) 1. आठ 2. अधिकरण 3. ने 4. परसर्ग **(ख)** 1. के 2. से 3. ने 4. पर **(ग)** 1. अधिकरण 2. अपादान 3. संप्रदान 4. कर्ता 5. संबोधन **(घ)** 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस

रूप से उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से पता चले, उसे कारक कहते हैं। 2. ने, को, से, के द्वारा, के लिए, से (अलग होना), का, के, की, में, पर, हे!, अरे! 3. कारक आठ प्रकार के होते हैं। उनके नाम हैं–कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन 4. **कर्ता कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले (कर्ता) का बोध हो, उसे कर्ता कारक कहते हैं। **अपादान कारक**–संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिसमें कोई वस्तु एक स्थान से अलग होती है, अपादान कारक कहलाता है। **करने की बारी–**अधिकरण, करण, अपादान

8. सर्वनाम

(क) 1. छह 2. तीन 3. अनिश्चयवाचक 4. संबंधवाचक **(ख)** 1. हमें 2. स्वयं 3. कहाँ 4. उसकी **(ग)** 1. आप-मध्यम पुरुषवाचक 2. हम-उत्तम पुरुषवाचक 3. संबंधवाचक 4. अनिश्चयवाचक **(घ)** 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। 2. सर्वनाम के छह भेद हैं-(1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम (3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (4) संबंधवाचक सर्वनाम (5) प्रश्नवाचक सर्वनाम (6) निजवाचक सर्वनाम 3. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं-(क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष (ग) अन्य पुरुष 4. जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता की निजता (अपनेपन) का बोध कराने के लिए किया जाता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। 5. जो सर्वनाम शब्द किसी पास या दूर की वस्तु अथवा व्यक्ति का निश्चयपूर्वक बोध कराए, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-यह, वह, वे, ये आदि। जो सर्वनाम शब्द किसी ऐसी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो, जो निश्चित न होकर अस्पष्ट और अनिश्चित हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। **करने की बारी–**स्वयं करें।

9. विशेषण

(क) 1. चार 2. विशेष्य 3. नीली 4. विशेषण (ख) 1. सुंदर 2. दो लीटर 3. अनेक 4. विशाल **(ग) विशेषण–**1. सुंदर 2. मीठे 3. हरी 4. लंबा 5. तेज़ **विशेष्य–**1. लड़की 2. आम 3. कमीज़ 4. पेड़ 5. वर्षा **(घ)** 1. जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं; जैसे-सुंदर, मोटा, गोल, चार, कुछ, भारी, हल्का आदि। 2. विशेषण के चार भेद हैं-(1) गुणवाचक 2. संख्यावाचक 3. परिमाणवाचक 4. सार्वनामिक या संकेतवाचक 3. छायादार, कमज़ोर, वीर 4. दो लीटर, तीन मीटर, थोड़ा। **करने की बारी–** स्वयं करें।

10. क्रिया

(क) 1. क्रिया शब्द 2. दो 3. कर्ता व क्रिया के शब्द **(ख)** 1. देख 2. सिल 3. लिखा 4.

खरीदी 5. धोए **(ग)** 1. मैंने भारत और पाकिस्तान का मैच देखा। 2. बाज़ार खुल गया होगा। 3. आम पक गए होंगे। 4. राधा नाच रही होगी। **(घ)** 1. जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे–बादल बरस रहे हैं। राम ने मोहन को पीटा आदि। 2. दो 3. जिन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म होता है, वे सकर्मक क्रिया कहलाती हैं। जिन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म नहीं होता, वे अकर्मक क्रिया कहलाती हैं। 4. सकर्मक क्रिया के तीन उदाहरण–(1) सारंग दूध पीता है। (2) माँ रामायण पढ़ रही हैं। (3) माधव फल खाता है। अकर्मक क्रिया के तीन उदाहरण–(1) रवि रोता है। (2) सात्विक तैरता है। (3) गुलाब खिलता है। **करने की बारी–**स्वयं करें।

11. काल

(क) 1. क्रिया के होने के समय को 2. तीन 3. भविष्यत् काल **(ख)** 1. भूत काल 2. वर्तमान काल 3. वर्तमान काल 4. भविष्यत् काल 5. भूत काल **(ग)** 1. रवि बाँसुरी बजाता है। 2. सौम्या ने पत्र लिखा। 3. वर्षा होगी। **(घ)** 1. क्रिया के जिस रूप से कार्य करने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। उदाहरण–(क) बालक सो रहा था। (ख) बालक सो रहा है। (ग) बालक सोएगा। तीनों वाक्यों की क्रियाओं के रूप से कार्य करने के अलग-अलग समय का बोध हो रहा है। यही समय काल है। 2. (क) बारिश हो रही है। (ख) तोता उड़ रहा है। 3. (क) नाटक समाप्त हो चुका था। (ख) दादी जी ने खाना खा लिया। 4. (क) कल से सर्कस शुरू होगा। (ख) लड्डू शाम तक बन जाएँगे। **करने की बारी–**स्वयं करें।

12. अविकारी शब्द

(क) 1. अविकारी 2. क्रिया विशेषण 3. चार 4. कालवाचक क्रिया-विशेषण **(ख)** 1. प्रेमपूर्वक 2. ध्यानपूर्वक 3. तेज़ 4. प्रतिदिन 5. चुपचाप **(ग) क्रिया विशेषण–**1. अंदर 2. कल 3. ज़ोर से 4. प्रतिदिन 5. थोड़ा **भेद का नाम–**1. स्थानवाचक 2. कालवाचक 3. रीतिवाचक 4. कालवाचक 5. परिमाणवाचक **(घ)** 1. वाक्यों में जिन शब्दों का रूप नहीं बदलता, उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहते हैं। 2. क्रियाविशेषण के पाँच उदाहरण–धीरे-धीरे, परसों, कल, ऊपर, कम। 3. क्रिया-विशेषण के चार भेद हैं–(क) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (ख) कालवाचक क्रिया-विशेषण (ग) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (घ) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण 4. **थोड़ा** खाओ। **करने की बारी–**स्वयं करें।

13. विलोम शब्द

(क) 1. रोगी 2. मुलायम 3. अपकार 4. शत्रु **(ख)** 1. जीत 2. अमीर 3. सुबह 4. अनुपस्थित 5. काली **(ग)** 1. जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ देते हैं, उन्हें विलोम शब्द

कहते हैं। 2. विपरीतार्थक शब्द। **करने की बारी–**नरक, दुर्भाग्य, पतला, जाना, बंद, निर्जीव, दुर्जन, गुण

14. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. पुत्री 2. नदी 3. सूर्य 4. दिन **(ख)** 1. मित्र-सखा 2. जंगल-वन 3. नदी-सरिता 4. कपड़ा-वस्त्र 5. राजा-नृप **(ग) चाँद–**शशि, राकेश, मयंक **पृथ्वी–**भूमि, धरा, भू **सूरज–**रवि, सूर्य, दिनकर **फूल–**पुष्प, सुमन, कुसुम **(घ)** 1. एक समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. समानार्थी शब्द **करने की बारी–**स्वयं करें।

15. वाक्यांश के लिए एक शब्द

(क) 1. मूर्तिकार 2. चिकित्सक 3. लोहार **(ख)** 1. अग्रणी 2. परिश्रमी 3. मृदुभाषी 4. दुधारू 5. शिकारी **(ग)** 1. श्रोता 2. अतिथि 3. सत्यवादी 4. शाकाहारी 5. कवि **(घ)** 1. जिन शब्दों से पूरे वाक्यांश या अनेक शब्दों के अर्थ का पता चलता है, उन्हें वाक्यांश के लिए एक शब्द कहते हैं। 2. भाषा में वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग वाक्यों को सुंदर, सुगठित व भावपूर्ण बनाने के लिए किया जाता है। **करने की बारी–**1. अल्पज्ञ 2. देशभक्त 3. कामचोर 4. दर्शनीय 5. सौभाग्यशाली

16. विराम-चिह्न

(क) 1. ? 2. ''.....'' 3. अर्ध विराम **(ख)** 1. सीमा पटना गई थी। 2. छि: छि:! यहाँ कितनी गंदगी है। 3. कल तुम क्यों नहीं गए? **(ग)** 1. भाषा लिखते समय हम अपने विचार को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। 2. दो शब्दों को जोड़ने के लिए तथा एक शब्द के दो बार आने पर योजक चिह्न (-) का प्रयोग किया जाता है; जैसे-अमीर-गरीब, पाप-पुण्य, माता-पिता, लाल-लाल, चलते-चलते, धीरे-धीरे आदि। **करने की बारी–**1. पूर्ण विराम 2. योजक 3. अर्ध विराम।